॥ उपसंहार ॥

"उपसंहार"

मेरे इस लघु शोध प्रबंध का विषय "भ्रमरगीत" के गोपियों की मनोदशा" यह है। इस प्रबंध के आमुख में मैंने सूरदास का जीवनवृत्त, उनकी रचनाएँ तथा पुष्टिसंप्रदाय के दार्शनिक विवेचन के बारेमें वर्णन किया है।

अनेक उपलब्ध ग्रंथों के आधार यह स्पष्ट होता है, कि सूरदास का जन्म सं. १५३५, वैशाख शुध्द पंचमी के दिन हुआ था। सूरदास जन्मांध थे। उन्हें भगवत् कृपा से दिव्य दृष्टि प्राप्त थी। कम उम्र में ही घर के लोगों व्दारा प्राप्त प्रेमहीन व्यवहार के कारण सूरदास ने घर त्याग दिया था। कुछ दिन एक पीपल के पेड के नीचे रहकर वे सं. १५५४ में मथुरा पहुँचे। सं. १५६७ में वल्लभाचार्यजी ने सूरदास पर प्रसन्न होकर उन्हे पुष्टिमार्ग की दीक्षा दी। तबसेवे देहावसान तक गोवर्धन पर्वत के नाथ मंदिर की कीर्तन सेवा में रहे। उनका देहावसान विव्दानों ने सं. १६४० माघ शुध्द व्दितिया को मान्य किया है।

सूरदास की रचनाओं को लेकर विवाद है। उनकी प्राय: सभी रचनाएँ "सूरसागर" में एकत्रित हैं। इन रचनाओं में पुष्टिमार्ग के दर्शन की सुंदर अभिव्यक्ति हुई है। पुष्टिमार्गी दर्शन शुध्दाव्दैतवादी है।

इस विवेचन के बाद मेरे प्रबंध के प्रथम अध्याय में मैंने भागवती कृष्ण - कथा, दशमस्कंध की कथा तथा "भ्रमरगीत" का विषय और स्वरूप को लेकर वर्णन किया है।

"भागवत" में आयी कृष्ण कथा प्रदीर्घ है। उसमें कृष्ण के जन्म, बाल्य, किशोर तथा यौवन की लीलाओं के साथ-साथ मथुरा में कृष्ण व्दारा अन्यायी कंस से जनमुक्ति, पांडव और कौरवों के बीच न्याय की विजय की स्थापना तथा यादवों के गणराज्य का निर्माण और कृष्ण के अवतार समाप्ति तक का विस्तार आया हैं।

2

"भागवत" की तुलना में "सूरसागर" में दशमस्कंध की कथा का अधिक विस्तार हुआ है। दशमस्कंध "सूरसागर" की आत्मा है। इसमें कृष्ण के जन्म से लेकर गोकुल तथा गोकुल से मथुरा गमन तक के कृष्ण जीवन का पूर्वार्ध आया है।

कृष्ण के मथुरा गमन के बाद कृष्ण विरही गोपियों का ज्ञान के उपदेश द्वारा सांत्वन करने आये उध्दव और कृष्ण के लिए भ्रमर का प्रतीक मान कर लिखा गया "भ्रमरगीत" एक भावपूर्ण गेय काव्य है। इसमें गोपियों की विरहाभिव्यक्ति के साथ प्रेम [भक्ति] की महत्ता और ज्ञान के थोथेपन का वर्णन किया गया है। सूरदास ने अपनी मौलिकता से इसे सजाया है।

"भ्रमरगीत" का विषय और स्वरूप इस प्रकार का है। कृष्ण और उध्दव के लिए भ्रमर के प्रतीक बनाकर लिखे काव्य को भ्रमरगीत कहते हैं। विरह में तड़पती गोपियों का सांत्वन करने कृष्ण मथुरा से अपने सखा उध्दव को योग का संदेश देकर गोकुल भेजते हैं। कृष्ण विरहिणी गोपियाँ अपने प्रिय के सखाद्वारा आया संदेश सुनने को उत्सुक होती हैं। उध्दव के मुख से योग का उपदेश सुनकर उनपर बिजली सी टूट पडती है। तभी एक भौंरा वहाँ आता है और गोपियाँ उसे उध्देश्य कर व्यंग्य उपालंभ पूर्ण बातें करने लगती हैं।

"भ्रमरगीत" का मूलाधार "भागवत्" है सूर ने अपनी रचना में "भागवत्" की तुलना में बहुत से परिवर्तन तथा परिवर्धन किये हैं। इस रचना के उद्देश्य भी "भागवत्" के भ्रमरगीत प्रसंग के उद्देश्यों से भिन्न हैं। "भागवत" में विरहिणी गोपियाँ कृष्ण का उध्दवद्वारा प्राप्त "ज्ञान" का संदेश सुनकर शांत होती हैं। सूर के "भ्रमरगीत" की गोपियाँ "ज्ञान" का उपदेश करनेवाले उध्दव की खिल्ली उडाती हैं और उध्दव को शुध्द हृदय भक्त बनाकर मथुरा —

भेजती है। सूरकी यह रचना इतनी लोकप्रिय हुयी कि इसके साथ भ्रमरगीत लेखन की एक परंपरा चल पड़ी और भ्रमरगीत" की रचना कालजयी हो गयी।

मैंने प्रस्तुत प्रबंध के द्वितीय अध्याय में सूरदास के भ्रमरगीत का परिचय और उसका अंतरंग का इसका वर्णन किया है। "भ्रमरगीत" के पदों में अभिव्यक्त गोपियोंकी मनोदशा एवं भक्ति के चित्रण को लेकर बाद में सुदीर्घ चर्चा की हैं।

"भागवत्" के ४६ और ४७ वें अध्याय के आधार पर भ्रमरगीत प्रसंग की रचना हुई है। सूरदास ने 'भ्रमरगीत' के व्दारा निर्गुण पर सगुण की विजय, ज्ञान पर भक्ति की विजय तथा योग पर प्रेम की विजय दिखायी है। यह भ्रमरगीत विरह शृंगार का उत्कृष्ट नमूना है। नंद यशोदा, गोपी गोप तथा राधिका व्दारा यह विरह शृंगार अपने सभी चार रूपों और अपनी ग्यारह अवस्थाओंमेंअभिव्यक्त हुआ है। इसमें गोपियों की मनोदशा का चित्रण सूर नारी मनोविज्ञान के आधार पर अत्यंत सरस रूपमेंअभिव्यक्त किया है। इस वर्णन में सूरकी प्रतिभा के अनेक चमत्कार नजर आते हैं। यह वर्णन बहुत ही मर्मस्पर्शी बना है।

गोपियों के कृष्ण और उध्दव के प्रति व्यंग्य गोपियों की विव्हलता, उनकी अनन्य भक्ति और कृष्ण के महान प्रेमी रूप को स्पष्ट करते हैं। इन पदों में सूर की भक्ति भावना रागानुगा पर आधारित है। इनमें १] भक्त और भक्ति का महत्व, २] गोपियों व्दारा निर्गुण भक्ति का खंडन ३] नामस्मरण और हरिपूजा, ४] विनय भक्ति ५] पुष्टिमार्गीय भक्ति ६] वात्सल्य भक्ति, ७] सख्य भक्ति, ८] मधुरा तथा प्रेमाभक्ति विषयक सूरकेविचार व्यक्त हुए हैं।

इस प्रबंध के तीसरे अध्याय में मैंने गोपियों के उपालंभ वचनों से संबंधित विचार व्यक्त किये हैं। ये विचार अनेक विव्दानों के ग्रंथों के आधार संकलित किए हैं।

उपालंभ की अनेक व्याख्याएँ मिलती हैं। इसकी प्रमुख विशेषताएँ चार हैं -

१] प्रिय की निष्ठुरता का वर्णन.

२] प्रेमानुभूति की दृढता का वर्णन,

३] प्रिय संबंधी स्मरण

४] प्रिय की रूप माधुरी तथा संयोग के वर्णन।

भ्रमरगीत के उपालंभों में ये सभी विशेषताएँ मिलती है। गोपियों ने अपने प्रिय कृष्ण की निष्ठुरता का वर्णन विविध पदों में किया है। इस उपालंभ के हर पद की यह विशेषता है, कि इसमें कृष्ण का असाधारण प्रेमी रूप तथा गोपियों की विवशता ही प्रकट होती है। ये उपालंभ गोपियों के प्रेम की अनन्यता और दृढता भी स्पष्ट करते हैं। इनमें गोपियाँ अपने प्रिय संबंधी अनेक बातों की यादें कहती है। कृष्ण का सौंदर्य वर्णन बडाही मनोहारी है। अपनी विह्वलावस्था स्पष्ट करने के लिए गोपियों ने संयोग की अनेक यादें कही हैं। उध्दव का नीरस योग उपदेश सुनकर ये गोपियाँ बौखला उठती हैं। वे कृष्ण के साथ उपालंभों को चपेट में उध्दव तथा सभी मथुरा को समेट लेती है।

सूरदास की भाषा की प्रौढता उपलंभ के वर्णनों में चरमसीमा को स्पर्श करती है। प्रतिभा की चमक के कारण सूर का यह विरह वर्णन रमणीय और मर्मस्पर्शी बना है। गोपियों के ये उपालंभ वचन रसिक पाठक नहीं भुला पाता।

000